Visit Dwarkadheeshvastu.com For
FREE Vastu Consultancy, Music, Epics, Devotional Videos
Educational Books, Educational Videos, Wallpapers
****
All Music is also available in CD format. CD Cover can also be print with your Firm Name
****
We also provide this whole Music and Data in PENDRIVE and EXTERNAL HARD DISK.
Contact : Ankit Mishra (+91-8010381364, dwarkadheeshvastu@gmail.com)

****

SOMVAR VRAT KATHA

(Hindi)

****

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

सोमवार व्रतकथा

(सरल हिंदी भाषा में)

व्रत का माहात्म्य व व्रतविधि,
सोलह सोमवार कथा,
प्रदोषव्रत कथा, सोमवार
एवं त्रिगुण शिव की
आरती सहित

मनोज पब्लिकेशन्स

तांत्रिक शिव पूजन यंत्र

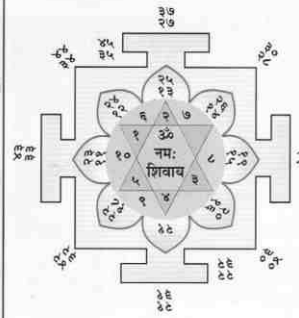

सोमवार व्रत कथा विधि

सोमवार का व्रत चैत्र, वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, कार्तिक मास में आरंभ किया जाता है। साधारणतः इस व्रत को श्रावण मास में आरंभ करें। व्रत रखने वाले स्त्री-पुरुष को चाहिए कि सोमवार को प्रातःकाल काले तिल का तेल लगाकर स्नान करे। विधिपूर्वक शिवजी का पूजन करे। षोडशोपचार से पूजन कर कम-से-कम एक माला भगवान शिव के पंचाक्षर मंत्र *'नमः शिवाय'* का जप करे। मंत्र से पहले ॐ लगाने से यह मंत्र छः अक्षरों वाला हो जाता है। इस मंत्र का जप समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाला है।

व्रत सोलह सोमवार तक करे, फिर उद्यापन करे। इस व्रत के प्रभाव से सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है। पति की कामना से यदि इसे कन्या करे, तो उसकी मनोकामना पूर्ण होती है।

सोमवार का व्रत साधारणतया दिन के तीसरे पहर तक होता है। व्रत में केवल एक ही समय भोजन करना चाहिए।

सोमवार के व्रत तीन प्रकार के हैं— साधारण प्रति सोमवार, सौम्य प्रदोष और सोलह सोमवार। पूजाविधि तीनों की एक जैसी है। शिव पूजन के पश्चात् कथा सुननी चाहिए। सोमवार, प्रदोषव्रत तथा सोलह सोमवार—तीनों की कथाएं अलग-अलग हैं, जो आगे लिखी गई हैं।

सोमवार व्रत कथा प्रारंभ

एक नगर में एक साहूकार रहता था। उसके घर में किसी चीज की कमी नहीं थी। परंतु वह पुत्र न होने के कारण बहुत दुखी था। पुत्र की कामना के लिए वह प्रत्येक सोमवार शिवजी का व्रत और पूजन किया करता था तथा सायंकाल मंदिर जाकर शिवजी के सामने दीपक जलाया करता था। उसके इस भक्तिभाव को देखकर एक समय माता पार्वती ने शिवजी से कहा, "प्रभु! यह साहूकार आपका अनन्य भक्त है, बड़ी श्रद्धा से आपका व्रत और पूजन करता है। आपको इसकी मनोकामना पूर्ण करनी चाहिए। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो मनुष्य आपका पूजन तथा व्रत क्यों करेंगे?" माता पार्वती का ऐसा आग्रह देख शिवजी कहने लगे, "हे पार्वती! इसके भाग्य में पुत्र न

होने पर भी मैं इसको पुत्र की प्राप्ति का वर देता हूं। परंतु वह 12 वर्ष तक ही जीवित रहेगा।"

माता पार्वती और भगवान शिव का यह वार्तालाप साहूकार सुन रहा था। इससे उसको न तो प्रसन्नता हुई और न ही दुख हुआ। वह पूर्व की तरह शिवजी का व्रत और पूजन करता रहा। कुछ समय बाद साहूकार के घर अति सुंदर पुत्र हुआ। साहूकार के घर में बहुत खुशी मनाई गई। साहूकार असलियत जानता था, इसलिए उसने न तो अधिक प्रसन्नता प्रकट की और न ही किसी को यह भेद ही बताया।

जब वह बालक 11 वर्ष का हो गया तो उसकी माता ने साहूकार से उसका विवाह करने के लिए कहा। साहूकार इसके लिए राजी नहीं हुआ। उसने बालक के मामा को बुलाकर उसे बहुत-सा धन देकर कहा, "तुम बालक को पढ़ने के लिए काशी ले जाओ

चुंदड़ी पर ऐसा लिखा हुआ पाया तो उसने अपने पिता को सारी बात बताने के बाद काने राजकुमार के साथ जाने से मना कर दिया। राजकुमारी के माता-पिता ने अपनी कन्या को विदा नहीं किया और बारात वापस चली गई।

उधर, सेठ का लड़का और उसका मामा काशी पहुंच गए। वहां जाकर उन्होंने यज्ञ करना और लड़के ने पढ़ना शुरू कर दिया। जब लड़के की आयु बारह साल की हो गई, उस दिन उन्होंने यज्ञ रचा रखा था। लड़के की तबीयत खराब हुई। वह अंदर जाकर लेटा और उसके प्राण निकल गए। जब उसके मामा ने आकर देखा कि उसका भानजा मृत पड़ा है तो उसको बड़ा दुख हुआ। उसने सोचा कि अगर मैं अभी रोना-पीटना मचा दूंगा तो यज्ञ का कार्य अधूरा रह जाएगा। अतः उसने जल्दी से यज्ञ का कार्य समाप्त करवाकर ब्राह्मणों के

जाने के बाद रोना-पीटना शुरू कर दिया। संयोगवश उसी समय शिव-पार्वती उधर से जा रहे थे। रोने और विलाप करने की आवाज सुनकर वे वहां पहुंच गए। उन्होंने पाया कि वहां एक लड़का मृत पड़ा था। माता पार्वती कहने लगीं, "महाराज, यह तो उसी सेठ का लड़का है, जो आपके वरदान से उत्पन्न हुआ था।" शिवजी ने कहा, "हे पार्वती! इसकी आयु इतनी ही थी।" तब पार्वती जी ने कहा, "प्रभु! इस बालक को और आयु दे दो, नहीं तो इसके माता-पिता तड़प-तड़पकर मर जाएंगे।" माता पार्वती के बार-बार आग्रह करने पर शिवजी ने उसको जीवन का वरदान दिया। शिवजी की कृपा से वह लड़का जीवित हो गया। शिवजी और पार्वती कैलाश पर्वत को चले गए।

शिक्षा पूर्ण होने पर वह लड़का और उसका

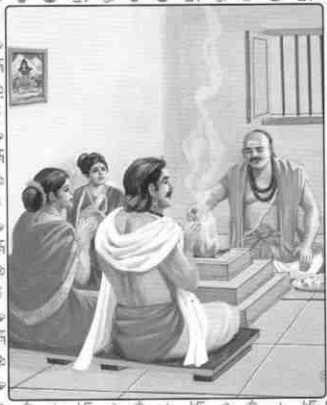

मामा, उसी प्रकार यज्ञादि शुभ कर्म करते अपने घर की ओर चल पड़े। रास्ते में उसी शहर में आए, जहां की राजकुमारी से लड़के का विवाह हुआ था। वहां आकर उन्होंने यज्ञ आरंभ कर दिया। उस लड़के के श्वसुर वहां के राजा ने उसको पहचान लिया और महल में ले जाकर उसकी बहुत आवभगत की तथा बहुत से दास-दासियों सहित आदरपूर्वक अपनी राजकुमारी और जमाई को विदा किया।

इधर, साहूकार तथा उसकी पत्नी अपने पुत्र को सही-सलामत लौट आया देखकर बहुत खुश हुए।

जो कोई सोमवार के व्रत को धारण करता है अथवा इस कथा को पढ़ता या सुनता है, उसकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं तथा इस लोक में नाना प्रकार के सुख भोगकर अंत में सदाशिव के लोक को प्राप्त होता है।

सौम्य प्रदोष व्रत कथा

एक विधवा ब्राह्मणी प्रत्येक प्रातः अपने पुत्र को साथ लेकर भिक्षा लेने जाती और संध्या को लौटती। भिक्षा में जो मिलता उससे अपना कार्य चलाती और शिवजी का प्रदोष व्रत भी करती।

आशुतोष शिव का यह व्रत वह तबसे रख रही थी, जबसे महर्षि शांडिल्य ने उसे ऐसा करने को कहा था। ब्राह्मणी असल में राजगुरु की पत्नी थी। जब प्रतिकूल समय आया, तो राज्य में विद्रोह हुआ और विद्रोहियों ने उसके पति की निर्दयतापूर्वक हत्या कर दी। पुत्र अभी छोटा था, इसलिए उसे न चाहते हुए भी अपने पति के शव का परित्याग कर भागना पड़ा। अपने पुत्र को लेकर वह इधर-उधर

भटकने लगी और उन दिनों की प्रतीक्षा करने लगी, जब उसका और उसके पुत्र का भाग्य बदलेगा। तभी एक दिन मार्ग में उसे महर्षि शांडिल्य मिले। ब्राह्मणी ने जब उन्हें अपना दुख सुनाया, तो उन्होंने ब्राह्मणी को कहा, "देवि! भगवान शिव की आराधना-उपासना करो। उनकी कृपा से तुम्हारे बुरे दिन बदल जाएंगे।" ब्राह्मणी तब से ही प्रदोष व्रत कर शिव की कृपा की प्रतीक्षा कर रही थी।

एक दिन जब वह भिक्षा के लिए अपने पुत्र के साथ जा रही थी तो मार्ग में उसे विदर्भ देश का राजकुमार धर्मगुप्त मिला। शत्रुओं ने उसे उसकी राजधानी से बाहर निकाल दिया था और उसके पिता को मार दिया था। वह किसी तरह अपनी जान बचाकर भाग आया था और जगह-जगह मारा-मारा फिर रहा था। ब्राह्मणी उसे अपने साथ ले आई और अपने पुत्र के साथ उसका पालन-पोषण करने लगी। दोनों मित्रवत् रहते थे। एक दिन दोनों मित्र वन में गए, जहां राजकुमार एक गंधर्व कन्या पर मोहित हो गया। कन्या ने अपने माता-पिता से अपना विवाह राजकुमार धर्मगुप्त से करने की इच्छा प्रकट की। उन्होंने कन्या की बात मानकर शंकर जी की आज्ञा से अपनी पुत्री का विवाह राजकुमार से कर दिया।

बाद में राजकुमार ने गंधर्वराज की सेना की सहायता से विदर्भ देश पर अधिकार कर लिया और ब्राह्मणी के पुत्र को अपना मंत्री बना लिया। यथार्थ में यह सब उस ब्राह्मणी के प्रदोष व्रत करने का फल था। बस, उसी समय से यह प्रदोष व्रत संसार में प्रतिष्ठित हुआ।

सोलह सोमवार व्रत कथा

मृत्युलोक में भ्रमण करने की इच्छा करके एक समय श्री भूतनाथ भगवान भोलेनाथ माता पार्वती के साथ मृत्युलोक में पधारे। भ्रमण करते-करते दोनों विदर्भ देशांतर्गत अमरावती नाम की अति रमणीक नगरी में पहुंचे। यह नगरी सब प्रकार के सुखों से परिपूर्ण थी। उसमें वहां के महाराज द्वारा बनवाया हुआ अति रमणीक शिवजी का मंदिर भी था। भगवान शंकर, भगवती पार्वती के साथ उस मंदिर में निवास करने लगे।

एक समय भगवान भोलेनाथ को प्रसन्न देख माता पार्वती ने चौसर खेलने की इच्छा व्यक्त की। शिवजी ने प्राणप्रिया की बात को मान लिया और चौसर खेलने लगे। उसी समय मंदिर का पुजारी मंदिर में पूजा करने आया।

माता पार्वती ने पुजारी से प्रश्न किया, ''हम दोनों में से किसकी जीत होगी?'' वह ब्राह्मण बिना विचारे शीघ्रता से बोल उठा कि महादेवजी की जीत होगी। थोड़ी देर में बाजी समाप्त हो गई और पार्वती जी की विजय हुई। पार्वती जी बहुत क्रोधित हुईं और ब्राह्मण को बिना विचार किए बोलने के अपराध के कारण कोढ़ी होने का श्राप दे दिया। पुजारी कोढ़ी हो गया।

पुजारी को श्राप-कष्ट भोगते हुए जब बहुत दिन हो गए, तब एक दिन देवलोक की अप्सराएं शिवजी की पूजा हेतु उसी मंदिर में आईं और पुजारी से उसके रोगी होने का कारण पूछा। पुजारी ने सारी बात उन्हें बता दी। उनमें से एक अप्सरा बोली, ''हे पुजारी! भगवान शिव तुम्हारे कष्ट को दूर कर देंगे। तुम भक्तिभाव से सब व्रतों में श्रेष्ठ षोडश सोमवार का व्रत किया करो।''

पुजारी ने जब व्रत की विधि पूछी तो अप्सरा ने बताया—सोमवार को भक्ति के साथ व्रत करें। स्वच्छ वस्त्र पहनें। संध्या व उपासना के बाद आधा सेर गेहूं का आटा लें। उसके तीन हिस्से करें और घी, गुड़, दीप, नैवेद्य, पुंगीफल, बेलपत्र, जनेऊ जोड़ा, चंदन, अक्षत, पुष्पादि के द्वारा प्रदोषकाल में भगवान शंकर का विधिपूर्वक पूजन करें। तत्पश्चात् तीन हिस्सों में से एक शिवजी को अर्पण करें। बाकी दो को शिवजी का प्रसाद समझकर उपस्थितजनों में बांट दें और आप भी प्रसाद पाएं। इस विधि से सोलह सोमवार व्रत करें। सत्रहवें सोमवार को पाव-सेर पवित्र गेहूं के आटे की बाटी बनाएं। उसमें घी और गुड़ मिलाकर चूरमा बनाएं। भगवान भोलेनाथ को भोग लगाकर उपस्थित भक्तों में बांटें। इसके बाद कुटुंब सहित प्रसाद लें। ऐसा करने से आपके सभी

मनोरथ पूर्ण होंगे। ऐसा कहकर अप्सराएं स्वर्ग को चली गईं।

ब्राह्मण ने यथाविधि षोडश सोमवार व्रत किया तथा भगवान शिव की कृपा से रोगमुक्त होकर आनंद से रहने लगा। कुछ दिन बाद शिवजी और पार्वती फिर उस मंदिर में पधारे। ब्राह्मण को नीरोगी देख पार्वती जी ने ब्राह्मण से रोगमुक्त होने का उपाय पूछा तो ब्राह्मण ने सोलह सोमवार व्रत की कथा सुनाई। पार्वती जी अति प्रसन्न हो ब्राह्मण से व्रत की विधि पूछकर स्वयं व्रत करने लगीं। व्रत करने के फलस्वरूप उनके रूठे पुत्र स्वामी कार्तिकेय माता के आज्ञाकारी हो गए। उन्होंने अपने हृदय परिवर्तन का भेद माता पार्वती से पूछा। फिर स्वयं भी मित्र मिलन की इच्छा से यह व्रत किया। उनसे मित्र ने जब आकस्मिक मिलन का भेद पूछा तो कार्तिकेय जी ने उन्हें भी

सोलह सोमवार व्रत का माहात्म्य बताया। तब मित्र ने भी यह व्रत किया और भगवान शिव की कृपा से उसका विवाह एक राजकुमारी से हो गया।

एक दिन राजकन्या ने पति से प्रश्न किया, ''हे प्राणनाथ! आपने ऐसा कौन-सा भारी पुण्य किया था, जिसके प्रभाव से मेरा आपसे विवाह हुआ?'' ब्राह्मण बोला, ''हे प्राणप्रिये! मैंने सोलह सोमवार व्रत किया था, जिसके प्रभाव से मुझे तुम जैसी गुणवती पत्नी प्राप्त हुई।'' व्रत की महिमा सुन राजकन्या भी पुत्र की कामना करके व्रत करने लगी। शिवजी की दया से उसके गर्भ से एक अति सुंदर, सुशील, धर्मात्मा और विद्वान पुत्र उत्पन्न हुआ। माता-पिता दोनों उस देवपुत्र को पाकर अति प्रसन्न हुए और उसका लालन-पालन भली प्रकार से करने लगे। जब पुत्र समझदार हुआ तो माता-पिता

को देखकर वह भी राज्याधिकार पाने की इच्छा से हर सोमवार को व्रत करने लगा। व्रत शुरू होने के बाद ऐसे संयोग बने कि पड़ोसी राजा की पुत्री के साथ उसका विवाह हो गया। वृद्ध राजा के दिवंगत हो जाने पर इसी ब्राह्मण युवक को सिंहासन पर बैठाया गया, क्योंकि दिवंगत राजा के कोई पुत्र नहीं था। राज्य का उत्तराधिकारी होकर भी वह ब्राह्मण पुत्र सोलह सोमवार का व्रत करता रहा। जब सत्रहवां सोमवार आया तो विप्र पुत्र ने अपनी प्रियतमा से पूजन-सामग्री लेकर शिवपूजा के लिए शिवालय चलने को कहा। परंतु उसकी पत्नी ने उसकी आज्ञा की परवाह न की। दास-दासियों द्वारा सब पूजन-सामग्री शिवालय भिजवा दी परंतु आप नहीं गई।

जब राजा ने शिवजी का पूजन समाप्त किया, तब आकाशवाणी हुई, ''हे राजा! अपनी रानी

को राजमहल से निकाल दे, नहीं तो यह तेरा सर्वनाश कर देगी।'' आकाशवाणी सुनकर राजा के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। न चाहते हुए भी राजा ने अपनी पत्नी को राजमहल से निकाल दिया। रानी दुखी हृदय से भाग्य को कोसती हुई नगर के बाहर चली गई। वह एक ग्राम में पहुंची। वहां एक बुढ़िया सूत कातकर बेचने जाती थी। रानी की करुण दशा देखकर वह बोली, ''चल, तू मेरा सूत बिकवा दे। मैं वृद्ध हूं, बोझ नहीं उठाया जाता।'' रानी ने बुढ़िया के सिर से सूत की गठरी उतारकर अपने सिर पर रख ली। तभी तेज आंधी आई और बुढ़िया का सूत पोटली सहित उड़ गया। बुढ़िया ने भी उसे अपने घर से निकाल दिया। इसके बाद रानी एक तेली के घर गई। शिवजी के प्रकोप के कारण तेली के सब मटके उसी क्षण चटक गए। तेली ने

भी रानी को अपने घर से निकाल दिया। अत्यंत दुख पाती हुई रानी एक नदी के तट पर गई तो नदी का समस्त जल सूख गया। तत्पश्चात् रानी एक वन में गई, वहां जाकर सरोवर में सीढ़ी से उतरकर पानी पीने गई। उसके हाथ का स्पर्श होते ही सरोवर का नीलकमल के समान जल असंख्य कीड़ों से भर गया। रानी ने भाग्य पर दोषारोपण करते हुए उस जल को पीकर पेड़ की शीतल छाया में विश्राम करना चाहा, परंतु रानी जिस पेड़ के नीचे जाती उस पेड़ के पत्ते तत्काल गिर जाते। वन सरोवर जल की ऐसी दशा देख गऊ चराते ग्वालों ने अपने गुसाईं जी से, जो उस जंगल में स्थित मंदिर में पुजारी थे, यह बात बताई। ग्वाले रानी को गुसाईं जी के पास लाए। रानी की मुख कांति और शरीर शोभा देख गुसाईं जी जान गए कि यह अवश्य ही कोई विधि

की गति की मारी कुलीन स्त्री है। पुजारी ने रानी से पूछा, ''हे पुत्री! तुम्हारे ऊपर कौन से देवता का कोप है, जिससे तुम्हारी ऐसी दशा है?''

पुजारी की बात सुन रानी ने शिवजी महाराज के पूजन का बहिष्कार करने की बात बताई तो पुजारी शिवजी महाराज की अनेक प्रकार से स्तुति करते हुए रानी से बोले कि पुत्री तुम सब मनोरथ पूर्ण करने वाले सोलह सोमवार व्रत को करो, उसके प्रभाव से अपने कष्टों से मुक्त हो सकोगी।

गुसाईं जी की बात मानकर रानी ने सोलह सोमवार व्रत किए और सत्रहवें सोमवार को विधि-विधान सहित पूजन किया। उस पूजन के प्रभाव से राजा के हृदय में विचार उत्पन्न हुआ कि रानी को गए बहुत समय व्यतीत हो गया। न जाने कहां-कहां भटकती होगी। उसे

ढूंढ़ना चाहिए। यह सोच रानी को तलाश करने के लिए राजा ने चारों दिशाओं में दूत भेजे। वे दूत रानी को ढूंढ़ते हुए पुजारी के आश्रम में पहुंचे। वहां रानी को पाकर पुजारी से रानी को अपने साथ ले जाने का आग्रह करने लगे। परंतु पुजारी ने मना कर दिया। दूत चुपचाप लौट आए और महाराज को रानी का पता बतलाया। रानी का पता पाकर राजा स्वयं पुजारी के आश्रम में गए और पुजारी से प्रार्थना करने लगे, ''महाराज! जो देवी आपके आश्रम में रहती हैं, वह मेरी पत्नी है। शिवजी के कोप से मैंने इनको त्याग दिया था। अब इस पर से शिवजी का प्रकोप शांत हो गया है, इसलिए मैं इन्हें लेने आया हूं। आप इनको मेरे साथ जाने की आज्ञा दीजिए।'' गुसाईं जी ने रानी को राजा के साथ जाने की आज्ञा दे दी। गुसाईं की आज्ञा पाकर रानी प्रसन्न होकर राजा के साथ

नगर में आई। नगरवासियों ने नगर के द्वार तथा नगर को तोरण एवं बन्दनवारों से विविध-विधि से सजाया। घर-घर में मंगल गान होने लगे, पंडितों ने विविध वेद-मंत्रों का उच्चारण कर अपनी राजरानी का स्वागत किया। ऐसी अवस्था में रानी ने पुनः अपनी राजधानी में प्रवेश किया। महाराज ने ब्राह्मणों को अनेक तरह से दानादि देकर संतुष्ट किया। इस प्रकार शिवजी की कृपा से अनेक सुखों को भोगने के पश्चात् दोनों शिवपुरी को पधारे।

जो मनुष्य मनसा-वाचा-कर्मणा भक्ति सहित सोलह सोमवार का व्रत एवं पूजन इत्यादि विधिवत् करता है वह इस लोक में समस्त सुखों को भोगकर अंत में शिवधाम को प्राप्त होता है। यह व्रत सब मनोरथों को पूर्ण करने वाला है।

॥ इतिश्री सोलह सोमवार व्रत कथा ॥

सोमवार की आरती

आरती करत जनक कर जोरे।
बड़े भाग्य रामजी घर आए मोरे॥
जीत स्वयंवर धनुष चढ़ाए।
सब भूपन के गर्व मिटाए॥
तोरि पिनाक किए दुई खण्डा।
रघुकुल हर्ष रावण मन शंका॥
आई सीता लिए संग सहेली।
हरषि निरख वरमाला मेली॥
गज मोतियन के चौक पुराए।
कनक कलश भरि मंगल गाए॥
कंचन थार कपूर की बाती।
सुर, नर, मुनिजन आए बराती॥
फिरत भाँवरी बाजे बाजे।
सिया सहित रघुबीर विराजे॥
धनि-धनि राम लखन दोऊ भाई।
धनि-धनि दशरथ कौशल्या माई॥
राजा दशरथ जनक विदेही।
भरत शत्रुघ्न परम सनेही॥
मिथिलापुर में बजत बधाई।
दास मुरारी स्वामी आरती गाई॥

त्रिगुण शिवजी की आरती

जय शिव ओंकारा हर जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्धाङ्गी धारा॥
एकानन चतुरानन पंचानन राजे।
हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजे॥
दो भुज चार चतुर्भुज दस भुज ते सोहे।
तीनों रूप निरखता त्रिभुवन जन मोहे॥
अक्षमाला बनमाला मुण्डमाला धारी।
चंदन मृगमद सोहे भोले शुभकारी॥
श्वेतांबर पीतांबर बाघंबर अंगे।
सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे॥
कर के मध्य कमण्डल चक्र त्रिशूलधर्ता।
जगकर्ता जगभर्ता जगसंहारकर्ता॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्ये ये तीनों एका॥
त्रिगुण शिवजी की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानंद स्वामी मनवांछित फल पावे॥